

अज्ञान नाशाय रिञ्जान पूर्णाय सुञ्जानदात्रे नमस्ते गुरो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १ ॥
आनन्दरूपाय नन्दात्तुज श्रीपदांभोजभाजे नमस्ते गुरो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ २ ॥
इष्टप्रदानेन कष्टप्रहाणेन शिष्टस्तुत श्रीपदांभोजे भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ३ ॥
इन्द्रे भरत्पाद पाथोजमाध्याय भूयोऽपि भूयो भयात् पाहि भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ४ ॥
उग्रं पिशाचादिकं दारयित्वाशु सौख्यं जनानां करेशीष भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ५ ॥
उर्जत् कृपापूर पाथोनिधेमंस्फु तूष्टोहनुगुहसि भक्तुरान् रिभो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ६ ॥
खज्जुत्तम प्राण पादार्चनप्राप्तु महात्त्यु संपूर्ण सिद्धेश भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ७ ॥
खड्गभारान्तु भक्तैश्चकल्लङ्घ रूपेश भूपदि रन्द्य प्रभो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ८ ॥
खड्गं यशस्ते रिभाति प्रकृष्टं प्रपन्नार्तिहंतर्महोदार भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ९ ॥
क्लिप्ताति भक्तैश्च काम्यार्थ दातर्भरांबोधि पारंगत प्राञ्ज भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १० ॥
एकांत भक्त्याय माकांत पादाङ्ग उच्चाय लोके नमस्ते रिभो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ११ ॥
ऋश्वर्भूमन् महाभाग्यदायिन् परेशां च कृत्यादि नाशिन् प्रभो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १२ ॥
ॐकार राचार्यभारेण भारेण लक्ष्मोदय श्रीक योगीश भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १३ ॥
ॐर्नलप्रथ्य दुरादिदारानलैः सर्वतंत्रैश्च स्वतंत्रेश भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १४ ॥
अंभोजसंभूतमुख्यामराराध्य भूनाथ भक्तेश भारञ्ज भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १५ ॥
असुंगतानेकमायादि रादीश रिद्योतितोशेष रेदांत भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १६ ॥
काम्यार्थदानाय बद्धादराशेष लोकाय सेरानुसक्त्याय भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १७ ॥
खद्योतसारेषु प्रत्यर्थिसार्थेशु मध्याह्न मर्तांड विंवाभ भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १८ ॥
गर्भिष्ठ गर्वांबुशोषार्थमात्युग्र नम्रांबुधेर्यामिनी नाथ भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १९ ॥
घोरामयध्वांत रिध्वंसनोदाम देदीप्य मानार्क विंवाभ भो ।
श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय श्रीराघरेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ २० ॥

ॐ गत्कारदङ्गाङ्क काषायरङ्गाङ्क कौपीन पीनाङ्क हंसाङ्क भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २१ ॥
चङ्डीश काङ्देश पाखण्ड राक्काण्ड तामिश्रमार्ताण्ड पाषण्ड भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २२ ॥
छद्माणुभागं नरिद्वन्द्वदंतः सुसद्वैर पद्मारधस्यासि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २३ ॥
जाड्यंहिनस्त्रिज्वरार्शःक्षयाद्याशु ते पाद पद्मांबुलेशोहपि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २४ ॥
वशध्वजीषेष्णलभ्योरुचेतः समारुचमारुच रक्फेङ्ग भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २५ ॥
ऋांचरिहीनाय यादृच्छिक प्राप्तु तूष्ठाय सदयः प्रसन्नोहसि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २६ ॥
टीकारहस्यार्थ रिख्यापनग्रंथ रिस्तार लोकोपकर्तः प्रभो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २७ ॥
ठङ्कुररीगाम मेघप्रभारोद्धरापाद संसारतो मां प्रभो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २८ ॥
डाकिन्यपस्मार घोरार्धिकोग्र ग्रहोच्छाटनोदग्र रीराग्र्य भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ २९ ॥
दक्काधिकध्वान रिद्वारितानेक दुर्दादिगोमायु संघात भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३० ॥
गात्रादिमात्रेर्णलक्ष्यार्थक श्रीपतिध्यानसन्नद्धधीसिद्ध भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३१ ॥
तापत्रय प्रौढ बाधाभिभूतस्य भक्तस्य तापत्रयं हंसि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३२ ॥
स्नानत्रयप्रापकज्जानदातस्त्रिधामांस्त्रिभक्तिं प्रयच्छ प्रभो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३३ ॥
दारिद्र्य दारिद्र्य योगेन योगेन संपन्न संपत्ति मा देहि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३४ ॥
धारंति ते नामधेयाभि संकीर्तनेनैन सामाशु वृन्दानि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३५ ॥
नाना रिधानेक जन्मादि दुःखोद्यतः साध्वसंसंहरोदार भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३६ ॥
पाता त्वमेरेति माता त्वमेरेति मित्रं त्वमेरेत्यहं रेद्वि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३७ ॥
फालसुदुर्दैरर्णरणीकार्यलोपेहपि भक्तस्य शक्नोहसि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३८ ॥
वद्वोस्मि संसार पाशेन तेहंस्त्रिं रिनान्या गतिनेत्येमेमि प्रभो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ३९ ॥
भारे भजामीह राचा रदामि त्वदीयं पदं दण्डरनौमि भो ।
श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ श्रीराघरेन्द्रार्थ पाहि प्रभो ॥ ४० ॥

